हिन्दी सामान्य

प्रस्तावना :–

हिन्दी सामान्य का अध्ययन उन छात्रों को करना होता है जो इसे द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं। हमारा देश बहुभाषी (हिन्दी, अँग्रेजी, मराठी, उर्दू, गुजराती आदि भाषा) है। अतः यहाँ राष्ट्र भाषा हिन्दी के अतिरिक्त अपनी मातृभाषा का अध्ययन करने वालों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने के लिए द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन कराया जाता है।

इस स्तर के छात्रों को हिन्दी भाषा की विशेषताओं से परिचित कराना अत्यंत आवश्यक होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाठ्य पुस्तक में सरल तथा रोचक एवं शिक्षाप्रद पाठों को समाहित किया जाए। इससे उन्हें शैलीगत विशेषताओं का परिचय तो मिलेगा ही साथ ही वे ज्ञानवर्धक उत्तम एवं रोचक साहित्य का रसास्वादन करने में भी समर्थ हो सकेंगे।

शिक्षण के उद्देश्य –

(1) भाषा की ग्रहणशीलता –

- शुद्ध, सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा में व्यक्त विचारों को सुनना और पढ़ना।
- विभिन्न भाषा शैलियों से परिचय।
- मानक भाषा से परिचय।
- प्रसंगानुकूल भाषा प्रयोग करने की क्षमता का विकास।
- साहित्य से भाषानुभूति और रसानुभूति का विस्तार।
- भाषिक पहचान, तुलना, विश्लेषण और संश्लेषण।

(2) अभिव्यक्ति –

- शुद्ध, सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा में सुनकर तथा पढ़कर अपने विचार अभिव्यक्त करना।
- साहित्य की विविध विधाओं के स्वरूप का ज्ञान तथा उसका यथा स्थान समुचित प्रयोग।
- साहित्य के मूल्यांकन की क्षमता का विकास।

(3) अभिवृत्ति में परिवर्तन –

- साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से उनमें राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास।
- साहित्य के माध्यम से सद्वृत्तियों – आस्था, प्रेम, देशप्रेम, मानव–प्रेम, सहृदयता, संवेदना का विकास।
- नाटक/एकांकी के माध्यम से जीवन की विभिन्न स्थितियों से परिचय कराना तथा तद्नुसार प्रेरणा देना।
- आँचलिक साहित्य और साहित्यकारों का परिचय एवं उनका महत्व समझना।

(4) सृजनशीलता को प्रोत्साहन –

- अपने भावों, विचारों की मौलिक अभिवृत्ति की क्षमता का विकास।
- भावानुकूल भाषा प्रयोग करने की क्षमता।
- कल्पना के माध्यम से विचारों को नया रूप देने की क्षमता का विकास।
- साहित्य के माध्यम से कविता, कहानी, संवाद, गीत आदि के मौलिक सृजन की प्रेरणा।

शिक्षण युक्तियाँ –

मातृभाषा के साथ–साथ द्वितीय भाषा के अध्ययन को और अधिक रोचक और आकर्षक बनाने के लिए भी शिक्षण युक्तियों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि ये पाठ को सरस और रोचक तो बनाती ही हैं तथा साथ ही भाषा को समझने, अभिव्यक्त करने और आनन्द लेने में भी सहायक होती हैं।

शिक्षण युक्तियों के सहज प्रयोग से भाषायी कुशलता का विकास होता है तथा प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग करने में सहायता मिलती है। शिक्षण युक्तियों के प्रयोग से छात्रों को विकास के अवसर मिलते हैं, इनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है तथा उनमें नई सूझ–बूझ विकसित होने की अधिक सम्भावना बढ़ती है, जिससे वे साहित्य की ओर प्रेरित होते हैं। शिक्षण को रोचक बनाने के लिए यथास्थान आँचलिक भाषाओं (छात्र जिस क्षेत्र की लोकभाषा से सम्बन्धित हैं) के शब्दों, कहानियों, गीतों, चुटकुलों आदि का समायोजन अपेक्षित है।

पाठ्यसामग्री –

इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से छात्रों को हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के विकास की विभिन्न धाराओं का परिचय देना है। साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों का ज्ञान कराते हुए उन्हे वर्तमान वैज्ञानिक, तकनीकी तथा संचार माध्यम की भाषा के प्रयोग में सक्षम बनाना है।

मध्यप्रदेश की संस्कृति की विविधता तथा इतिहास की गौरवगाथाओं के महत्व को देखते हुए मध्यप्रदेश के साहित्यकारों की विशिष्ट रचनाओं को समाहित करना अपेक्षित होगा।

इस पुस्तक में लगभग 20 पाठ प्रस्तावित हैं। आवश्यकता एवं स्तर के अनुरूप परिवर्तन सम्भव है।

हिन्दी सामान्य

कक्षा – 12
प्रश्न पत्र

समय – 3 घण्टे **पूर्णांक – 100**

क्रम	विषय सामग्री	अंक	कालखण्ड
01	**पद्य खण्ड** – व्याख्या, सौन्दर्य बोध, विषय वस्तु पर प्रश्न	25	40
02	**गद्य खण्ड** – अर्थग्रहण संबंधी, विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न	25	40
03	**हिन्दी साहित्य का इतिहास** – निबन्ध साहित्य का विकास	05	10
04	**व्याकरण** – शब्द बोध, वाक्य भेद, समास, वाक्य रूपान्तरण वाक्य –अशुद्धि संशोधन, भावपल्लवन/भाव विस्तार लोकोक्तियाँ/मुहावरे/शब्द युग्म	20	30
05	**अपठित बोध** – गद्यांश – शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न पद्यांश – शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न	10	15
06	**पत्र लेखन/प्रपत्र लेखन** –	05	10
07	**निबन्ध लेखन** –	10	15
	पुनरावृत्ति		20
	योग	**100**	**180**

निर्धारित पाठयपुस्तक – मकरंद (गद्य–पद्य संकलन)

पद्य खण्ड –		
पद्य पाठों पर आधारित किसी एक पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या	05	
सौन्दर्य बोध पर प्रश्न	10	**25**
कविता की विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न	10	
गद्य खण्ड –		
गद्य पाठों पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न	10	
गद्य पाठों की विषयवस्तु पर आधारित बोधात्मक प्रश्न	15	**25**
हिन्दी साहित्य का इतिहास –		
निबंध साहित्य के इतिहास पर प्रश्न (परिभाषा, भेद एवं विकास)		**05**
व्याकरण–		
भाषाबोधः		
समास विग्रह तथा समास के भेद पर प्रश्न	02	
संक्षिप्तिकरण पर प्रश्न	02	
अनेकार्थी शब्द पर प्रश्न	02	
भिन्नार्थक समोच्चारित शब्द पर प्रश्न	02	
पारिभाषिक, तकनीकी शब्दों के प्रयोग पर प्रश्न	02	**20**
वाक्य भेद (रचना, अर्थ के आधार पर) वाक्य रूपान्तरण पर प्रश्न	02	
वाक्यगत अशुद्धि संशोधन पर प्रश्न	02	
लोकोक्तियाँ/मुहावरे पर प्रश्न	02	
भाव पल्लवन/भाव विस्तार पर प्रश्न	02	
शब्द युग्म पर प्रश्न	02	

अपठित बोध –

गद्यांश – शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न 05
पद्यांश – शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न 05 } **10**

पत्र लेखन एवं प्रपत्र पूर्ति – 05

पत्र – व्यावसायिक पत्र एवं संपादक के नाम पत्र

प्रपत्र–(प्रयोजन मूलक)–बैंक, डाकखाने, तार, तथा रेलवे आरक्षण आदि के प्रपत्र भरना।

निबन्ध लेखन – 10

विचारात्मक, वर्णनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं सम–सामयिक समस्याओं पर निबंध लेखन पर प्रश्न

प्रायोजना कार्य–

1) क्षेत्रीय बोली–पहेलियाँ, चुटकुले, लोकगीत, लोक कथाओं का परिचय तथा खड़ी बोली में उनका अनुवाद।
2) दूरदर्शन/आकाशवाणी के कार्यक्रम पर प्रतिक्रियाएं/विश्लेषण।
3) हिन्दी साहित्य का स्वतंत्र पठन/टिप्पणी एवं प्रेरणाएँ।
4) हस्त लिखित पत्रिका तैयार करना।
5) म.प्र. से प्रकाशित होने वाली हिन्दी भाषा की पत्र पत्रिकाओं की जानकारी।

टिप्पणी–

प्रायोजना कार्य से सम्बन्धित विषयवस्तु पर (अंक आवंटित न होने के कारण) परीक्षा में प्रश्न पूछे जाना अपेक्षित नहीं है।

निर्धारित पाठयपुस्तक – मकरंद (गद्य–पद्य संकलन)।

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा संकलित एवं निर्मित तथा मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित।